आई.आई.ए. अध्यक्ष की कलम से....

वर्तमान खुली भूमंडलीय अर्थव्यवस्था (Global liberalization) ने जहां हमारे लिए अपने उत्पादों के बाजारीकरण की अपार संभावनाएं प्रस्तुत की है, वहीं एक चुनौती भी खड़ी कर दी है। इन नए बाजारों में अपने उत्पाद बेचने के लिए तथा अपनी पैठ बनाने के लिए आवश्यक है कि हमारे उत्पादो की गुणवत्ता भी विश्व–स्तरीय हो। गुणवत्ता का स्तर बनाये रखने के लिए आवश्यकता है कुशल एवं निपुण कारीगरों की। अतः आज आवश्यकता है शिक्षा प्रणाली में संशोधित शिक्षुता योग्यता को समाहित करने की।

देश में औद्योगीकरण की गति निरंतर बढ़ रही है, परंतु हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में, किसी भी स्तर पर, औद्योगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था लगभग नगन्य है। यद्यपि देश में जगह–जगह औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई0टी0आई0) खोले गए है, परंतु ऐसी कोई कारगार व्यवस्था नहीं है कि इन संस्थानों में पढ़ रहे छात्रों को पढ़ाई के साथ–साथ किसी औद्योगिक इकाई से सम्बद्ध किया जाए जहां उन्हें व्यवहारिक प्रशिक्षण भी मिले।

इण्डियन इण्डस्ट्री एसोसिऐशन (आई0आई0ए0) ने, कौशल विकास कार्यक्रम (Skill Development Programme) के माध्यम से इस दिशा में पहल करने का प्रयास किया है, ताकि बेरोजगार उल्पशिक्षित युवक–युवतियों को उत्पादन संबंधी विभिन्न प्रक्रियाओं में व्यवहारिक–प्राविधिक–प्रशिक्षण दिया जा सके। यह कार्य सरकार द्वारा बनाई गई नीति के अनुसार प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम चरण में 1800 पात्र शिक्षुओं को निर्धारित प्राविधिक प्रक्रियाओं में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाऐगा। आई0आई0ए0 का प्रयास रहेगा कि हमारे द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षु वास्तव में स्वयं को एक कुशल एवं निपुण करीगर के रूप में स्थापित कर सकें। इससे एक ओर तो अनेको बेरोजगार अपनी जीविका उपार्जन के लिए समाज में अपना सम्मानजनक स्थान बना पायेंगे, साथ ही उद्योगों को भी उनकी कार्य–कुशलता का लाभ अपने उत्पादों की गुणवत्ता स्थापित करने में मिलेगा।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि एम0एस0एम0ई0 की वर्तमान में देश के औद्योगिक विकास में अहम भूमिका है और यदि हम अपने उत्पादों की गुणवत्ता विश्वस्तरीय बना पाये तो वह दिन दूर नहीं कि कब दुनिया हमें विकसित राष्ट्र के रूप में देखने लगें।

जुगल किशोर